विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक30-05-2021

वर्ग- अष्टम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्रत्ययाः

प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो किसी भी धातु या शब्द के अंत में जुड़ कर उसके अर्थ को परिवर्तन कर देता है। जैसे- पठ्(पढ़ना)पठितुम् (पढ़ने के लिए) पठित्वा(पढ़कर) इत्यादि

प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं।

(1)कृत प्रत्यय

(2)तद्धित प्रत्यय

(3) स्त्री प्रत्यय

क्त एवं क्तवतु

‘कृत्’ प्रत्ययों के योग से भूतकालिक क्रिया-पदों का भी निर्माण होता है ऐसे ‘कृत्’ प्रत्यय दो हैं - ‘क्त’ और ‘क्तवतु’। इसमें ‘क्त’ प्रत्यय के योग से बने भूतकालिक क्रिया- पदों का प्रयोग कर्मवाच्य में या भाववाच्य में होता है; लेकिन अकर्मक धातुओं से कर्तृवाच्य मैं भी होता है और ‘क्तवतु’ प्रत्यय के योग से बने क्रिया-पदों का प्रयोग केवल कर्तृवाच्य मे। ‘क्त’ प्रत्यय के योग से बने क्रिया-पदों का प्रयोग जब कर्तृवाच्य में होता है तब वह क्रिया विशेष्ट कर्ता का अर्थ देता है जैसे -

क्री + क्त = क्रीता, क्रतम्। मया फलानि क्रीतानि। (मुझसे फल खरीदे गए अथवा मैंने फल खरीदे।)

भू +क्त = भूतः, भूता, भूतम्। सः भूतः। तेन भूतम्। (वह हुआ। उससे हुआ गया।)

पठ् +क्तवतु = पठितवान्; पठितवती, पठितवती।

सः पुस्तकं पठितवान्। (उसने पुस्तक पढ़ी।)

तेन पुस्तकं पठितम्। (उससे पुस्तक पढ़ी गयी।)

मूलधातु	प्रत्यय	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	अर्थ
कृ +	क्त	= कृतः	कृता	कृतम्	किया गया
क्री +	क्त	= क्रीतः	क्रीता	क्रीतम्	खरीदा गया
स्मृ +	क्त	= स्मृतः	स्मृता	स्मृतम्	याद किया गया
पठ् +	क्त	= पठितः	पठतता	पठितम्	पढ़ा गया
लिख् +	क्त	=लिखितः	लिखिता	लिखितम्	लिखा गया